एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 04 (सितम्बर-अक्टूबर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सरसो के प्रमुख नाशिजीवों का प्रबंधन

(*राजवीर यादव[1] एवं डॉ. विपिन कुमार[2])
[1]पी.एच.डी. शोधार्थी, कीट विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर
[2] सह आचार्य, कीट विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर
*rajveertonk@gmail.com

सरसो वर्गीय फसले हमारे देश की तिलहन फसलों में मुख्य भूमिका निभाती हे। इन फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी का सीधा असर विदेशी मुद्रा में पड़ता हे। इन फसलों में तोरिया, पिली व भूरी सरसो, गोभी सरसो, राया (भारतीय सरसो) व तारामीरा है। सरसो का तेल स्वास्थय के लिए बहुत लाभदायक होता हे। सरसो का उत्पादन मुख्यतय सिंचित क्षेत्र एवं सीमित सिंचित क्षेत्रों में किया है। इन फसलों के उत्पादन बढ़ाने एवं इस खेती को टिकाव बनाने में एक प्रमुख समस्या नाशीजीवियो का प्रकोप है। इन नाशिजीवों से सरसो की फसल को 10 से 96 प्रतिशत तक उपज में हानि पहुंचाते है ।

प्रमुख नाशीजीव

चेपा / माहू : - यह कीट छोटे कोमल, सफ़ेद-हरे रंग का होता है। इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों पोधो के अलग अलग भागो से रस चूसते हे। इस का प्रकोप मुख्यत दिसम्बर से फरवरी के अंत तक देखा जा सकता हे। यह कीट सरसो का प्रमुख कीट हे जो फसल नुकसान में 25 से 40 प्रतिशत तक उपज में हानि पहुँचता हे। इस कीट की आर्थिक हानि की सीमा 10 से 20 माहू प्रति पोधा है।

चितकबरा कीट :- इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों ही सरसो के पौधे की अवस्था से लेकर वनस्पति, फली बनने एवं पकने तक पौधे का रस चूस कर हानि पहुचाते हे। फसल काट कर रखने पर भी इस कीट का आक्रमण देखा जा सकता हे। इस कीट के आक्रमण से फसल में तेल की मात्रा एवं उत्पादन में बहुत कमी देखने को मिलती हे।

सरसो का काले धब्बे रोग / आल्टेरनेरिया पर्ण अंगमारी :- यह रोग बड़े पैमाने पर सरसो में लगता हे। इस रोग का प्रकोप पौधे की पत्तियों तनो, फलियों इत्यादि पर हलके भूरे रंग के गोल धब्बे के रूप में प्रदशित होता हे जो बाद में ये हल्के काले रंग के आकर के हो जाते हे। इससे बीज की गुणवत्ता भी प्रभावित होती हे। जिस कारण इसकी अंकुरण में कमी एवं बाजार भाव काम मिलता हे। गीला व गर्म मौसम या अदल बदल के वर्षा व धुप तथा तेज हवाएं इस रोग को बढ़ाने में सहायक हे।

सफ़ेद रतुआ :- यह रोग सर्वप्रथम पत्तियों पर आता हे। जब तक तना एवं पुष्पक्रम में दिखाई पड़ता हे जिससे पुष्पक्रम फूल कर विकृत हो जाता है, जिससे पैदावार में 17 -34 प्रतिशत तक कमी आती है। यदि हवा के साथ तेज वर्षा होती है तो यह रोग तीव्र गति से फैलता है।

स्क्लेरोटिनिया विलगन :- इन रोग में पत्तो व तनो पर लबे चिपचिपे धब्बे दिखाई देते है जो बाद में कवक की वृद्धि से ढक जाते हे। इस रोग का प्रकोप फसल में फूल आने की अवस्था से होता है। जब मौसम ठंडा व नम होता हे तो इस रोग की उग्रता बढ़ती हे। इस रोग से सूखे पौधे के तनो में काले रंग वाले पिंड बन जाते है।

चूर्णल आसिता :- प्रारंभ में ये रोग पौधे के तनो ,पतियों एवं फलो पर श्वेत, गोल आटे जैसे चूर्ण जैसे धब्बे के रूप में दिखाई देते हे। तापमान की वर्द्धि के साथ साथ ये धब्बे आकर में बड़े होते जाते है।

लाभप्रद जीव

काक्सीनेला :- इसके शिशु दुबले एवं इनके वक्षांग एवं पैर अच्छी तरह से विकसित होते हे। इनके प्रौढ़ चमकीले, पीले, नारंगी,या गहरे लाल रंग के धब्बे वाले होते हे।

क्रायसोपरला :- प्रौढ़ कीट के लेसविंग हरे रंग के 12 -20 मिमी लम्बे होते हे। इनके पंख पारदर्शी एवं हलके पीले रंग के होते हे तथा कोमल होता हे।

ट्राइकोडर्मा :- ट्राइकोडर्मा एक महत्वपूर्ण जैविक नियंत्रण कवक हे। इनका समूह (कालीन) सामान्य हरे रंग का होता हे। ट्राइकोडर्मा कवक सरसो के विभिन्न रोगो जैसे सफ़ेद रोली,एवं स्लेरोटिनिया गलन रोगो की रोकथाम में प्रयोग किया जाता हे।

समेकित नाशीजीव प्रबंध

सरसो की फसल को नाशिजीवों के प्रकोप से बचने के लिए एवं होने वाली हानि को कम करने के लिए इन नाशिजीवों का समेकित प्रबंध अपनाना चाहिए। इसमें फसल की विभिन्न अवस्था में निम्नलिखित उपाए करना करे।

फसल बुआई के समय प्रबंध

- **बुआई का उपयुक्त समय :-** सरसो का सही समय अक्टूबर माह का द्वितीय सप्ताह उपयुक्त माना जाता हे।
- **प्रमाणित बीज :-** क्षेत्र के लिए स्वीकृत, उन्नत, साफ रोग रहित प्रमाणित बीजो को प्रयोग करना चाहिए।
- **भूमि उपचार :-** भूमि में ट्राइकोडर्मा कवक उत्पाद 2.5 कि.ग्रा प्रति हेक्टर को 50 कि.ग्रा सदी हुए गोबर में मिलाकर, सरसो की बुआई से पूर्व अवश्य मिलाना चाहिए जिससे बीमारियों का प्रकोप काम होता है।
- **बीजोपचार :-** ट्राइकोडर्मा आधारित जैविक उत्पादक द्वारा 10 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से या ताजा बनाये हुए लहसुन सत से 2 प्रतीशत की दर से बीजोपचार करे।

- **उचित दुरी :-** बीज की स्वीकृत मात्रा का प्रयोग करे व क़तार से क़तार तथा पौधे से पौधे की उचित दुरी बनाये रखे।

पौधे को वानस्पतिक अवस्था पर प्रबंध

- छोटे पौधे में सिंचाई करने से पौधे चतकबरा कीट के आक्रमण को सहन कर पाने में काफी सक्षम हो जाते हे।
- माहू से प्रभावित टहनियों को प्रारम्भ अवस्था में ही तोड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- माहु के प्राकृतिक शत्रु कीट जैसे क्राइसोपा, सिरफिड,कोक्सिनेला, आदि की कीटनाशकों से रक्षा करे।
- माहू के पर्यावरण संतुलित प्रबंध्र के लिए 1 मि.ली./ली. पानी की दर से डाइमिथोएट या मिथाइल डेमेटोन का छिड़काव करे एवं तदुपरांत 5000 भृंग/हे. की दर से **काक्सीनेला कीट** को छोड़े।
- माहू के लिए परभक्षी कीट क्राइसोपरला के 45000 से 50000 शिशु /है. की दर से खेत में छोड़े।
- आवश्यकता से अधिक पोधों का विरलीकरण करे। कीटो व रोगो से ग्रषित पोधों को खेत से निकलकर नष्ट करे।
- फसल की आवश्कतानुसार अनुसार 2 -3 सिंचाई, पहली सिंचाई फूल आते समय, दूसरी सिंचाई फली बनने समय तथा तीसरी सिंचाई दाना भरते समय करे।

फूल एवं फली बनने की अवस्था पर प्रबंध

- खेत का नियमित भम्रन करे एवं नाशीजीव दिखने पर इसके रोकथाम के लिए चरण उपायी करे।
- ताजा बने हुए लहसुन सत से 2 प्रतीशत या ट्राइकोडर्मा कवक उत्पाद 2 ग्राम /ली. पानी की दर से छिड़काव करे
- आरा मम्खी, चितकबरा कीट की रोकथाम के लिये मेलाथियान 5 % चुण 25 किलो प्रति हेक्टर की दर से प्रातः या सायकाल भुरके या मेलाथियान 50 ई सी सवा लीटर या डाईमीथोएट 30 ई सी 875 मिली प्रति हेक्टर की दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करे दिसम्बर में मोयला का प्रकोप होने पर पुनः उपरोक्त दवाओं का छिड़काव करना चाहिए ।
- सफ़ेद रतुआ के ज्यादा प्रकोप पर मेटलैक्सिस +मेंकोजेब कवकनाशी का 2.5 ग्राम/ली. की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे।
- स्कलरोटिनिया तना गलन रोग ग्रसित पोडो जो की सामान्य पोधो से पक जाते हे को पिंड (स्क्लेरोशिया) बनने से पूर्व ही जड़ से उखड कर बहार निकल दे एवं बाद में रोग ग्रषित अवशेषो को जला दे।
- समय- समय पर खेत से खरपतवार निकालते रहे व मधुमखियो को कीटनाशको के नुकसान से बचाने की लिए कीटनाशो का छिड़काव शाम को करे।